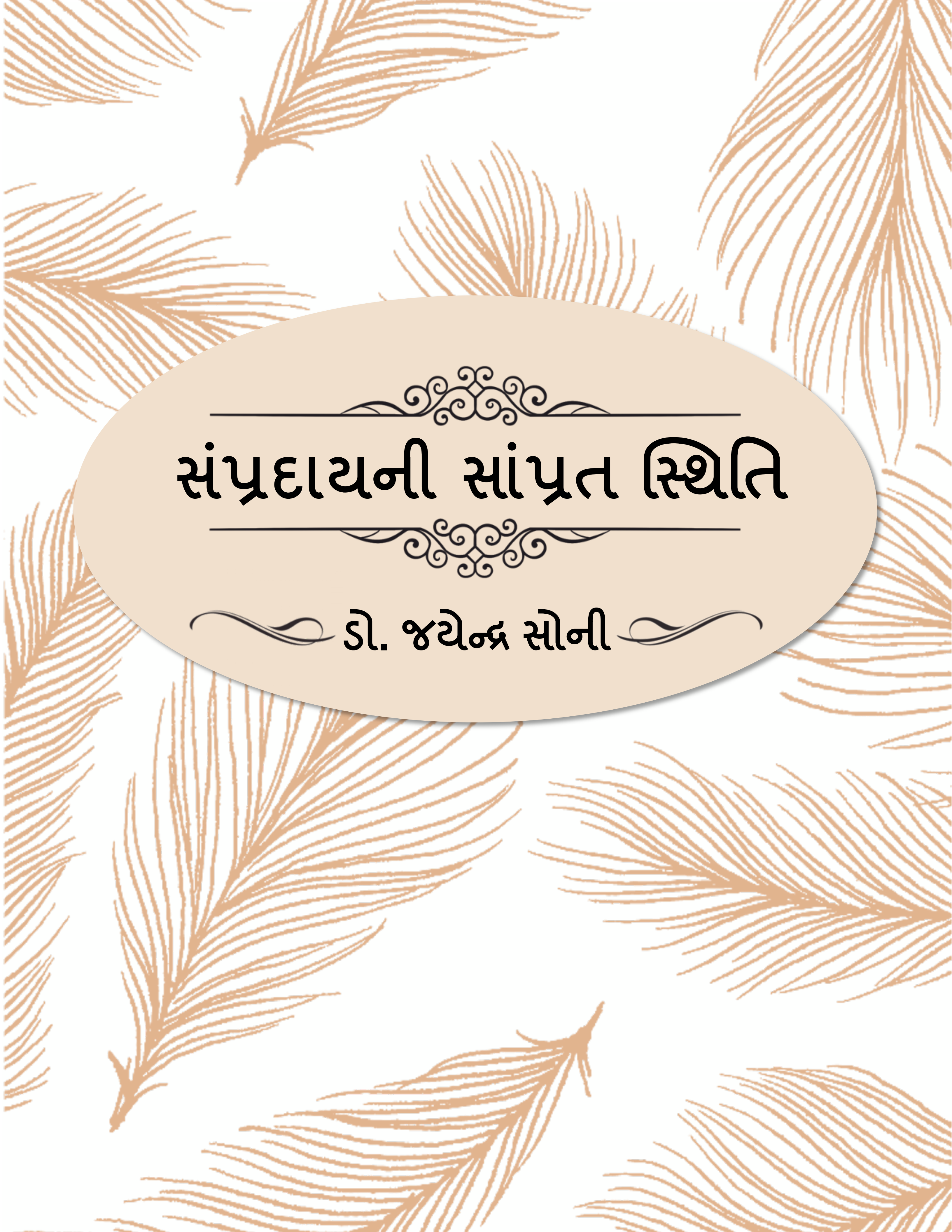

સંપ્રદાયની સાંપ્રત સ્થિતિ

ડો. જયેન્દ્ર સોની

સંપ્રદાયની સાંપ્રત સ્થિતિ

(*“સંપ્રદાયની સાંપ્રત સ્થિતિ”* was one of Dr. Jayendrabhai Soni’s message segments which was delivered on mediums like Whatsapp groups and his Facebook account. Here is a collated document of all the messages related to this segment.)s

"संप्रदायनी सांप्रत स्थिति". (१)

****

आपणे जाणिये छीए के प्रभुचरण श्रीगुसांईजी सर्वोत्तम स्तोत्र मां समजावे छे तेम स्वयं भगवाने स्वयं नी ईच्छा थी ज पोताना माहात्म्य ने वाणी द्वारा प्रकट करवा, पोताना मुखार्विंद ने ज श्रीमहाप्रभुजी स्वरुपे प्रकट कर्या छे. तदर्थ आपश्रीए श्री गोपीजनोए अपनावेल भगवद् प्राप्ति ना पुष्टिमार्ग ने तेवीज फल-प्राप्ति कराववा माटे 'प्रेमलक्षणा भक्ति' नो सर्वोत्तम उपाय 'पुष्टि-संप्रदाय' नामे प्रस्थापित / प्रवर्तित कर्यो छे. ते पण पोताना स्वतंत्र विचारोना आधारे नहीं, परंतु, वेदादि भगवद् शास्त्रोनो, भगवद् वचनोनो आधार लई आ संप्रदाय नुं अनुसरण करवा ईच्छता दैवी जीवोना मार्गदर्शन माटे तद्विषयक सिद्धांतो पोताना विशिष्ट ग्रंथोमां प्रकाशित कर्यो छे.

पोतानी ईच्छाथी पुत्र रुपे प्रादुर्भूत थनार भगवद् स्वरुप श्रीगुसांईजीए पण श्रीमहाप्रभुजीए प्रस्थापित करेल संप्रदाय नो विभिन्न ग्रंथो नी रचना करी, अनेक विध विस्तारी पुष्टिमार्गीय साधना प्रणाली ने एक चोक्कस दीशा आपी छे. तदर्थ श्रीगुसांईजी पण पुष्टि संप्रदाय ना सह-संस्थापक / प्रवर्तक छे. तत्पश्चात् भगवानना दिव्य गुणोथी विभुषित तेमना बालको तेमज तेमना विद्वान आचार्य वंशजो -श्रीहरिरयजी, श्रीपुरुषोत्तम जेवा महानुभावोए श्रीमहाप्रभुजी / श्रीगुसांईजी ना दुर्बोध सिद्धांतोने समजाववा अनेक ग्रंथो रच्या छे.

श्रीगुसांईजी ना चतुर्थ पुत्र श्रीगोकुलनाथजीए श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र नी टीका मां श्रीमहाप्रभुजी ना नाम "स्ववंशे स्थापिताशेष स्व माहात्म्य" विशे स्पष्टतया खुलासो कर्यो छे के 'वंश' शब्द थी श्रीगुसांईजी (पुत्र तरीके) नो सूचितार्थ छे, केमके श्रीमहाप्रभुजी सदृश्य कोई होई सके नहीं. आ वात नु अनुमोदन श्रीहरिरायजी ए पण कर्यु छे.

आम पुष्टि संप्रदायना, जेने आपणे सामान्यतः पुष्टिमार्ग कहिये छीए, तेना गुरु श्रीमहाप्रभुजी तेमज श्रीगुसांईजी ज छे, केमके तेओ तेना प्रतिपादक - प्रस्थापक छे. तदर्थ तेमने आलेखेला सिद्धांतो ज पुष्टि-संप्रदाय नी गतिविधीयो माटे मात्र ने मात्र प्रमाण रुप स्वीकारी शकाय.

विशेष मां कोईपण संप्रदाय ना प्रवर्तन / वहन माटे - १.तत्त्वोपदेश २, सिद्धांतोपदेश, ३. व्यवहारोपदेश तथा ४. फलोपदेश' संप्रदाय ना आचार्यश्रीए करवो जरूरी होय छे. तदर्थ प्रवर्तक आचार्यश्री ते चारेय बाबतोथी संपुर्णतया पारंगत होवा आवश्यक छे, कारण के तोज तेओ संप्रदायना अनुयायीओने साचु मार्गदर्शन आपी शके! फल प्राप्ति कराववा सहायभूत थई सके ! ...... क्रमशः........ (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"संप्रदायनी सांप्रत स्थिति" (२)

****

... क्रमशः.....श्रीसर्वोत्तमजी मां श्रीमहाप्रभुजी नुं एक नाम गुरु पण बताव्युं छे, जेनुं तात्पर्य,आपश्री द्वारा प्रवर्तित / उपदिष्ट पुष्टि-संप्रदाय नुं फल आपवा आपश्री सक्षम छे, जेवीरीते कपिल देवजी सांख्य दर्शन तथा मर्यादामार्ग ना उपदेशक होवाथी फलदाता हतां, तेथी गुरु हतां. आम श्रीमहाप्रभुजी पुष्टि-संप्रदाय ना "गुरु" छे. तदर्थ श्री पुरुषोत्तम जीए खुलासो करेल छे के 'पुष्टिमार्ग'ना एक मात्र 'गुरु' श्रीमदाचार्यचरण ज होई शकेे, केमके 'फल अपाववा नुं सामर्थ्य आपश्री ज धरावे छे. तेथी वल्लभकुल ना आचार्यश्रीओ ने 'गुरुद्वार' कह्या छे. पुष्टिमार्ग नुं फल अपाववा नुं तेमनुं स्वतंत्र सामर्थ्य नथी.

तेथी अनुयायी वर्गे स्पष्टपणे समजवुं जोईए के वर्तमान मां पण स्वयं श्रीमहाप्रभुजी ज पोताना वंशज द्वारा ब्रह्मसंबंध नी दीक्षा आपे छे, सेवार्थे भगवद् स्वरुप पधरावी आपे छे, संप्रदाय विषयक मार्गदर्शन आपे छे. ते तेमनुं विशेष माहात्म्य छे. ए सर्वे प्रक्रियाओमां अनुयायीओए वल्लभकुल मां व्यक्तिगत रुपे नही. परंतु तेमनामां श्रीवल्लभ वत् श्रद्धा राखी अहोभाव व्यक्त करवो जोईए.

जो समग्र वल्लभीय सृष्टि (तेना बन्ने अंग - बिंदु सृष्टि तेमज नाद सृष्टि) आ 'वास्तविकता ने यथार्थ रुपे समजीने व्यवहार करे तो वर्तमान मां संप्रदायमां जे मत-मतांतर प्रवर्ते छे, ते स्थिति निर्मुल थई शके! सौए ए वात समजवी अने स्वीकारवी घटे के पुष्टिमार्ग ना प्रवर्तन माटे समग्र 'वल्लभीय सृष्टि' ना "गुरु" श्रीमहाप्रभुजीए तेमज पूर्वाचार्योए प्रतिपादीत करेल सिद्धांत अने तेमणे करेला खुलासा सिवाय अन्य प्रमाण होई शके नहीं. तेथी समस्त आचार्यश्रीओए संप्रदाय नो तत्वोपदेश, सिद्धांतोपदेश, व्यवहारोपदेश तेमज फलोपदेश', तदनुसारज अनुयायी वर्ग ने आपवो जोईए, अन्यथा के स्वविचारोथी नहीं.

परंतु आजे अनुयायी वर्गमां विशेषतः, मोटी गेरसमज प्रवर्ते छे. ज्यारे तेओ कोई वल्लभकुल आचार्यश्री द्वारा ब्रह्मसंबंध नी दीक्षा ग्रहण करे छे त्यारे तेमनी ओळख दीक्षादाता आचार्यश्रीनी ज थवाथी, तेओ तेमने ज व्यक्तिगत रुपे पोताना 'गुरु' मानी ले छे. नानी वयना बालको मां तो आ वात दृढपणे स्वीकारी लेवामां आवती होय छे, मोटाभागे तेमनामां आ वात ठसाववामां पण आवे छे. पुष्टिमार्ग ना प्राथमिक ग्यान ना के एवा कोई विशेष प्रशिक्षण ना अभावमां पुष्टिमार्ग ना सर्वे दीक्षार्थी श्रीवल्लभ द्वारा ज दीक्षित थतां होवा छतां आजे अनेक गुरुओ नी सृष्टि अस्तित्व मां छे.

एवुं पण जोवा मां आवे छे के पुष्टिमार्गनी गरिमा / विशिष्टता श्रीमदाचार्यचरण ने कारणे ज होवा छतां, केटलाक आचार्यश्रीओ स्वयं, तेमज तेमना खास अनुयायीओ द्वारा पोतानी प्रतिष्ठा ने उजागर करवा अनेकानेक उपक्रमो नुं आयोजन करतां होय छे, जेना कारणे संप्रदाय नी अखंडीतताने तो हानी पहोंचे छेज, तेथी विशेष, पुष्टिमार्ग नी सैद्धांतिक विचारधारानुं पण पोतानी व्यक्तिगत अनुकुलता / मान्यतानुसार अर्थघटन करवामां आवतुं होवाथी विचार वैमनस्य पण वधे छे, जे आजे सोशियल मिडियामां जोई शकाय छे, जे पुष्टिमार्ग नी समग्रताने माटे आ प्रवृत्ति घातक सिद्ध थई सके छे. .... क्रमशः......

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"संप्रदायनी सांप्रत स्थिति" (३)

****

.... क्रमशः....... आपणे जाणिये छीए के भगवाने स्वयं 'निज दैवी जीवोना उद्धारार्थे श्रीमद् वल्लभाचार्यजी स्वरुपे प्रकट थई 'पुष्टि संप्रदाय' प्रस्थापित कर्यो, प्रवर्तित कर्यो छे. पोतानामांथी छुटा पडेला जीवो,जेमनुं भगवाने पुष्टिमार्ग मां वरण करेल होवा छतां, अविद्या ना कारणे अनेक प्रकारना दोषोथी ग्रस्त थवाने लिधे पोतानुं स्वरुप विस्मृत थई जवाथी, जन्म-मरण ना चकरावामां जेओ भटकी रह्या हतां, तेमना दोषोनी निवृत्ति करी प्रभु साथे पूनः जोडवा माटे, स्वयं भगवाने पोते प्रकट थई, श्रीवल्लभाचार्यजी ने ब्रह्मसंबंध मंत्र द्वारा जीवोने दीक्षित करवानी आग्या करी हती. तदनुसार श्रीमहाप्रभुजीए पोताना अवतारकाल मां दैवी जीवोने शोधी शोधी ने शरणे लई तेमनो उद्धार कर्यो हतो.

भगवद् आग्याथी पोते भूतल परथी प्रत्यक्ष रुपे विदाय लीधा पछी, पोताना स्वरुप ने पोताना पुत्र श्रीगुसांईजीमां पधरावेल होई, तत्समयमां पण अन्य दैवी जीवोने शरणे लई तेमनो पण उद्धार कर्यो, एटलुंज नहीं तत्पश्चात छेल्ला ५०० वर्षथी 'निज कुल' मां बिराजीने श्रीमहाप्रभुजीए पोताना 'भगवद् सामर्थ्य' ने कारणे अनेकानेक दैवी जीवोना उद्धार नी परंपरा अद्य पर्यंत चालु राखी छे. ते श्रीमहाप्रभुजीनुं विशेष माहात्म्य छे.

'अवतार काल' मां तो पोते तेमज श्रीगुसांईजीए स्वात्मबल -'प्रमेय बल'थी दैवी जीवोनो उद्धार कर्यो हतो, परंतु 'अनवतार काल' मां पण 'प्रमाण बल' थी तेमनो उद्धार करवा श्रीमहाप्रभुजीेए पोतानुं 'तत्वदर्शन' तेमज 'धर्मदर्शन' पोताना विभिन्न ग्रंथो मां आलेखी, भगवान नी 'सृष्टि-लीला'नो बोध पोते स्थापेल पुष्टि संप्रदाय ना अनुसरण करावनार / करनार, 'बिंदु सृष्टि' (निज वंशज आचार्यश्रीओ) तथा 'नादसृष्टि' (अनुयायीओ) ना मार्गदर्शन हेतु सुस्पष्टपणे आप्यो छे.

स्वाभाविक छे के श्रीमहाप्रभुजीए स्थापेल परंपरा तेमणे प्रतिपादित करेला 'तात्त्विक सिद्धांतो' नी समज तेमज तेमणे सूचवेल 'साधना प्रणाली' अनुसार आचरण द्वारा ज पुष्टि-संप्रदाय नी 'मौलिकता' तथा तेनी 'फलदायिता' अक्ष्क्षुण रही सके. तदर्थ कोई अन्यथा अर्थघटन के स्वतंत्र विचारोनुं स्थान पुष्टि संप्रदाय मां न होई सके. अन्य दार्शनिक विचारधाराओ / धार्मिक आस्थाओनो भले आपणे आदर करीए, तेनो विरोध न करीए के टिका - टिप्पणी न करीए, ते जरुरी छे, परंतु श्रीमदाचार्यचरण ना सिद्धांतो मां संपुर्ण अनन्यता होवी अने अटल विश्वास होवो ए समग्र 'वल्लभीय सृष्टि' माटे अनिवार्य गणाय. त्यारेज आपणु आश्रय पद - "द्रढ इन चरणन केरो" नुं गान सार्थक थई शके, अन्यथा ते मात्र दंभ थी विशेष न कहेवाय. वास्तवमां आजे 'सर्व धर्म समभाव' ना विचारो ने अपनावी अन्याश्रय आचरतां अनेक उदाहरण जोवा मळे छे, ते पण संप्रदाय नी गरिमा ने झांखी पाडे छे...... क्रमशः....... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"संप्रदायनी सांप्रत स्थिति" (४)

****

.... क्रमशः .... ज्यारे परंपरागत रीते वर्तमान मां श्रीमहाप्रभुजी स्ववंशमां बिराजी, पुष्टि संप्रदाय ना अनुयायीओने तत्वोपदेश, सिद्धांतोपदेश, व्यवहारोपदेश तथा फलोपदेश 'निज सामर्थ्य' द्वारा करवा तत्पर होय त्यारे तेमना वंशजो मां पण तेमणे निबंध ग्रंथना सर्वनिर्णय प्रकरण (का.२२७) मां बतावेल 'गुरु' ना लक्षणो प्रकट होवा अपेक्षित गणाय, केमके आपश्रीए "कृष्ण सेवा सदा कार्या" ने 'स्व-सिद्धांत' तरीके रजु कर्यो छे (सि. मु.), तेमज सर्वसंदेह वारक 'भागवत' ने पोते स्वीकारेल 'प्रमाण-चतुष्टय' नुं मुख्य अंग गण्यु

छे (शा. प्र).

तदर्थ, स्वाभाविक रीते वर्तमान मां वल्लभकुल आचार्यश्रीओ मां 'व्यवहारोपदेश' एवम् 'फलोपदेश' देवा माटे 'कृष्ण सेवानी परायणता', तेमज 'तत्त्वोपदेश' एवम् 'सिद्धांतोपदेश' आपवा माटे 'भागवत तत्त्वग्य' होवा अपेक्षित गणाय. जो गुरु स्वयं कृष्णसेवा परायण न होय तो, न तेओ कृष्णसेवा नी अनिवार्यता समजावी शके, न सेवानी प्रणालीगत रीत बतावी शके. तेवीज रीते तेओ श्रीमहाप्रभुजीए प्रतिपादीत करेल दार्शनिक सिद्धांतो नुं ग्यान पण अनुयायी वर्ग ने आपवा वेद-गीता-ब्रह्मसूत्रो ना सार रुप श्रीमद् भागवत ना मर्मग्य होवा पण आवश्यक गणाय, जेथी तेमने 'तत्त्वोबोध' आपी शके.

तदुपरांत, श्रीमहाप्रभुजीए गुरु माटे त्रीजु महत्वनुं लक्षण "दंभादि रहितं" बताव्यु छे, जे अति महत्त्वनुं कही शकाय, कारण के जो आचार्य स्वयं, तेनी व्याख्या "आचरति आचरयति च ईति आचार्य" मुजब, पोते जे उपदेश अनुयायीओने आपता होय तदनुसार पोताना जीवनमां आचरण न करता होय तो तेमनो उपदेश कारगत निवडी शके नहीं. 'कथनी' अने 'करणी' नी एकरुपता शिष्योना उत्कर्ष माटे गुरु मां होवी आवश्यक छे.

श्रीमहाप्रभुजीए उपरोक्त कारिका मां पुष्टिमार्गनुं अनुसरण करवा ईच्छता अनुयायीओने अनुलक्षीने एक महत्व नो बोध आपता आग्या करी छे के तेमणे गुरु नी वरणी करतां आ बाबतो लक्ष मां लेवी जोईए, जेथी तेने योग्य मार्गदर्शन मली रहे अने पोते पुष्टिमार्ग नुं सर्वोच्च फल-प्राप्ति करी शके.

तदर्थ आपणे समजी शकीए के ज्यां सुधी अनुयायी स्वयं श्रीमहाप्रभुजीना ग्रंथो वांची / समजी तेमना उपदेश ने ग्रहण न करे, त्यां सुधी आवी प्रकीर्ण बाबतोथी माहितगार न थई शके, जेथी भ्रमित थवानी शक्यता पुरेपुरी रहेली छे, अने जे फल पामवाना तेनी अपेक्षा होय तेनाथी ते वंचित रहे, अने कदाच जीवन वेडफाई पण जाय !

माटेज श्रीमहाप्रभुजी पोते आग्या करे छे - "शास्त्रम् अवगत्य मनोवाग्देहैः कृष्ण सेव्यः". .... क्रमशः......... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

संप्रदायनी सांप्रत स्थिति" (५)

****

..... क्रमशः (जुन,२७) .... श्रीमहाप्रभुजीए उपरोक्त 'गुरु' ना लक्षणो नो निर्देश करतां पहेलां एक अति महत्त्वनो खुलासो कर्यो छे. ते मुद्दानी स्पष्टता करतां 'आवरणभंग' टीका मां श्रीपुरुषोत्तमजी समजावे छे के -"अत्रे सर्वेनो फलमुख अधिकार नथी, परंतुं जे जीवो पर भगवान नी कृपा थाय तेमनीज आ मार्गमां प्रवृत्ति थाय छे.....,तेनेज भक्ति ना मुख्यफल नुं दान थाय छे.... भगवत्कृपानुं परिग्यान मार्गनी रुची परथी थाय छे".अहीं 'मार्ग रुचि' ना लक्षणो पण बताव्या छे.

आथी स्पष्ट थाय छे के पुष्टिमार्गमां प्रवेश ना अने तदर्थ ब्रह्मसंबंध करवाना (दीक्षा लेवाना) सौ कोई अधिकारी नथी. (आ वात नुं वर्तमान मां समग्रपणे दुर्लक्ष करवामां आवे छे).

बीजी महत्त्व नी वात श्रीमहाप्रभुजीए, जेमणे आ मार्गमां अहीं निर्दिष्ट लक्षणोना आधारे पुष्टिमार्गमां प्रवेश मेळववो होय तो तेणे केवा गुरुनी "वरणी" करवी जोईए, तेनो निर्देश उपरोक्त कारिका (२२७) मां कर्यो छे, अर्थात् - जे पोते 'कृष्णसेवा परायण', 'भागवत् तत्त्वग्य' अने 'दंभादि दोष रहित' होय. ते माटे "विक्ष्यं"

- 'सारी रीते परिक्षण करीने' दीक्षा लेवानी आग्या करी छे. पुष्टिमार्ग मां प्रवेश ईच्छता अनुयायीओने माटे आ एक अति महत्त्वनो दिशा-निर्देश छे. तेनी साथे, दीक्षार्थी "जिग्यासु", तेमज अगाउ कह्यु तेम ते "भगवत्कृपा युक्त" होवानी खात्री गुरुए पण करी लेवी आवश्यक छे, तेनुं सूचन पण कर्यु छे, एटलुंज नही परंतु अन्यथा जो ब्रह्म संबंध करावे तो, "गुरुए,गीता(१८/६७) मां करेली भगवदाग्या नो भंग कर्यो कहेवाशे"(आवरण भंग-पे.५७), तेम खुलासो पण कर्यो छे.

स्वयं श्रीमहाप्रभजी/ श्रीपुरुषोत्तमजीए करेला उपरोक्त खुलासा थी ए वात स्पष्ट थाय छे के जो श्रीवल्लभ वंशज आचार्यश्री 'गुरुद्वार' रुपे पण श्रीमहाप्रभुजीनी कानीथी योग्य अनुयायी ने दीक्षा द्वारा पुष्टिमार्ग मां प्रवेश करावे छे तो, तेमणे पण आ कारिकाओना निर्देश नुं पालन करवुं अनिवार्य छे कारणके ते आग्याओ आ मार्गना प्रस्थापक / प्रवर्तक श्रीमदाचार्यचरण एवम् स्वयं भगवान नी छे. ..... क्रमशः ......(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"संप्रदायनी सांप्रत स्थिति" (६)

****

.... क्रमशः.......आ रीते 'पुष्टि संप्रदाय' मां 'गुरु' नुं विशेष महत्त्व छे. तदर्थ ज श्रीमहाप्रभुजीए तद्-विषयक् उपरोक्त खुलासा कर्या छे. जे जीवनुं भगवाने 'पुष्टिमार्ग' मां वरण कर्यु छे, जेना कारणे तेने सहज 'मार्ग-रुची' थई होय, तो तेने 'पुष्टि-फल' नी प्राप्तिना हेतु थी ब्रह्मसंबंध करवा / साचु मार्गदर्शन मेळववा माटे, श्रीमहाप्रभुजी ना निर्देश मुजब योग्य 'गुरु' नी वरणी करवी आवश्यक गणाय! ते मात्र वल्लभकुल आचार्य होय एटलुं ज पुरतुं नथी,परंतु तेओ उपरोक्त लक्षणोथी विभुषित होय ते पण जरुरी छे, ते उपरोक्त कारिका तेमज तेना पर श्रीपुरुषोत्तमजी नी टिकाथी स्पष्ट थाय छे. कारणके तोज तेओ संप्रदायने समजाववा अनुयायी वर्गने 'पुष्टि संप्रदाय'नु सारी रीते अनुसरण करवा, तेमने तत्त्वोपदेश, सिद्धांतोपदेश व्यवहारोपदेश अने फलोपदेश आपी शके.

उपरोक्त लक्षणोवाळा गुरु जो न मळे, जे वर्तमान काळमां मलवा दुष्कर होवानी संभावना ने लक्ष मां लई, तेना कारणे कोई अधिकारी जीव 'पुष्टि फल' नी प्राप्ति थी वंचित न रहे ते हेतुथी 'सर्व निर्णय -निबंध' नी कारिका २२८ मां श्रीमहाप्रभुजीए निर्देश कर्यो छे के - "तेवा गुरु ना अभावमां, जेमना पर भगवद् कृपा थवाथी 'मार्ग रुची' ईत्यादि मापदंडो व्यक्त होय, तेमणे पोतानी रुची अनुसार कृष्ण नी मूर्ति पधरावी - 'तेज पोताना स्वामी छे' तेम मानी तेनुं भजन (सेवा) शरु करी देवुं जोईए.

श्रीमहाप्रभुजीए करेली आ आग्या घणी बाबतो नो स्पष्ट संकेत सूचित करेछे. आपश्रीए 'सिद्धांत मुक्तावलि' ग्रंथमां "कृष्णसेवा सदा कार्या" ना उपदेश ने 'स्व-सिद्धांत' कह्यो छे, तेनी अनिवार्यता अहीं बतावी छे. ए वात पण समजी शकाय के सेवक ना हृदयना साचा उत्कट भावथी मूर्ति मां भगवद् तत्त्वनो आविर्भाव स्वयं थई शके छे.

योग्यता धरावनार पुष्टिजीवने,पुष्टिमार्ग मां प्रवेश करी अंतिम लक्ष नी प्राप्ति माटे 'सिद्धांतोपदेश' वगेरे सर्व प्रकार नुं मार्गदर्शन श्रीमहाप्रभुजीना विविध ग्रंथ साहित्य मांथी प्राप्त थाय छे. तेमां पण तेमनो 'निबंध' ग्रंथ विशेषतः सर्व प्रकारे तेनो 'पथ-प्रदर्शक' बनी शके छे. आवश्यकता छे, श्रीमदाचार्यचरणनो पोताना गुरु रुपे, योग्य वल्लभकुल ना माध्यमथी के तेमना वांग्मय स्वरुपे स्वीकार करी, तेमना ग्रंथो नो स्वाध्याय पूर्वक दढ आश्रय करवानी. .... क्रमशः... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"संप्रदायनी सांप्रत स्थिति. (७)

****

.... क्रमशः....... उपरोक्त वचनोथी ए स्पष्टतया फलित थाय छे के पुष्टिमार्गमां "गुरु" पदे शाश्वत रुपे श्रीमदाचार्यचरण ज स्थापित छे, कारणके तेमना द्वारा निर्दिष्ट गुरुना लक्षणो संपुर्णतया तेमना पोतानामांज विद्यमान छे (श्रीमहाप्रभुजीना वचनथी श्रीगुसांईजी सदृश्य ज छे). तेमनो अन्य विकल्प होई शके ज नहीं केमके श्रीगुसांईजी स्वयं आग्या करे छे के 'श्रीमहाप्रभुजी समान न कोई छे, न होई शके ! श्रीहरिरायजी ए पण अनेक स्थाने श्रीमहाप्रभुजी मां अनन्यता पूर्वक द्रढाश्रय करवानी आग्या करी छे, कारण के आ मार्गमां फल प्राप्ति तेमना थकी ज छे. श्रीपुरुषोत्तमजीए तो स्पष्टतया विधान कर्यु छे के 'गुरु' एक मात्र श्रीमहाप्रभुजी छे, अने समस्त वल्लभकुल आचार्यो 'गुरुद्वार' होई वर्तमान मां तेमना द्वारा स्वयं तेओज पुष्टि संप्रदाय नी दीक्षा आदी दई रह्या छे. आ माहात्म्य स्वयं श्रीमदाचार्यचरणनुं छे.

पुष्टिमार्ग ना स्थापक श्रीमहाप्रभुजी होवाथी, तेमज तद्विषयक सिद्धांतो तेमणे प्रतिपादित करेला होई, वर्तमान समयमां, देश-काल परिस्थिती ने अनुलक्षीने संप्रदाय नी साधना प्रणाली बाबत परिवर्तन नी कदाच अवकाशक्ता समजी शकाय छे, परंतु तेना मूलभूत सिद्धांतो तो वेदादि प्रमाणो पर आधारित होई शाश्वत ज छे अने तदर्थ संप्रदायनी सर्वे गतिविधीयो ते सिद्धांतो ने सुसंगत ज होवी जरुरी छे. जो तेमां मनस्वी प्रमाणे, लोकोना मनोरथ पूर्ण करवा के तेमनी सगवड खातर अथवा आर्थिक लाभ प्राप्ति माटे छुटछाट लेवामां के आपवामां आवे, अथवा कोई विपरित रीत अपनाववामां आवे, तो श्रीमदाचार्यचरण द्वारा स्थापित सैद्धांतिक मुल्योनो ह्रास थाय एटलुंज नहीं, परंतुु, तेमना प्रादुर्भाव माटे भगवद् आग्या नुं प्रयोजन ज निष्फल थाय!. तेवा उपक्रमो ने 'पुष्टिमार्ग' ना नाम साथे जोडवा ते स्वयं श्रीमहाप्रभुजी साथे छल समान गणाय. स्वयं श्रीवल्लभकुल, जेमनी वर्तमान मां अनुयायी वर्गने 'गुरुद्वार' रुपे, संप्रदाय विषयक यथार्थ मार्गदर्शन आपवानी नैतिक जवाबदारी छे, तेओ ज ते माटे निमित्त बने ते कल्पनातित गणाय! .... क्रमशः. .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

संप्रदायनी सांप्रत स्थिति" (८)

****

.... क्रमशः ....एक महत्व नो मुद्दो अहीं विचारवो जरुरी छे. मात्र वल्लभकुल आचार्यश्रीओए ज नहीं,संप्रदाय नाअनुसरण करनार वैष्णव समुदाये पण, कारणके समग्र 'वल्लभीय सृष्टिना तेओ पण अभिन्न अंग छे, तेओ श्रीमहाप्रभुजी द्वारा प्रवर्तित पुष्टिमार्ग ना अंग होवानुं पोताने माने छे माटे.

जेम प्रत्येक धर्म के संप्रदाय ना स्थापक / प्रवर्तक द्वारा तेना सिद्धांतो प्रतिपादित करवामां आवे छे, तेमज तेनी आचार संहिता घडवामां आवेछे, तेम श्रीवल्लभाचार्यजीए पण 'वेद-गीता-ब्रह्मसूत्रो-भागवत' नुं दोहन करी पोताना 'दार्शनिक सिद्धांतो' रजु कर्या छे, अने तदंतर्गत आ संप्रदाय नुं अनुसरण करवा माटे 'आचार संहिता' घडी छे, जेने अपनाववी समस्त वल्लभीय सृष्टि माटे फरजीयात होय.

जेम देशनुं बंधारण छे, जेमां केटलाक अटल मूलभूत सिद्धांतो रजु करवामां आवेल छे, जे बदली

शकाता नथी, अने तदनुसार सामाजीक जीवन व्यवहार माटे कायदा घडवामां आवेछे,जेमां समयानुसार "संसद" द्वारा फेरफार करवामां आवे छे.

तेवीज रीते, पुष्टिमार्ग ना आधारभूत मूल सिद्धांतो, आ मार्गनी आगवी ओळख छे, जे तेने अन्य संप्रदायो थी अलग पाडे छे, विशिष्ठ बनाने छे. तेधीज तो तेने "पृथक शरणमार्ग" कहेवाय छे. तेना माळखामां कोईज छेडछाडने अवकाश न होई शके, कोई ने तेनो हक्क न होई शके. परंतु परिवर्तनशील देश-काल परिस्थिती ने अनुरुप तेनी 'आचार संहिता' मां अगर आवश्यकता जणाय तो 'गुरुद्वार' रुपे वल्लभकुल सामुहिक रीते योग्य फेरफार करी शके!. संप्रदायने वर्तमान मां वहन करवानी जवाबदारी केमके समस्त वल्लभकुलनी छे, सर्वे आचार्यश्रीओ 'गुरुद्वार' रुपे श्रीमदाचार्यचरण नुं प्रतिनिधित्व करे छे, तेओ सौ श्रीमहाप्रभुजीने जवाबदार छे. तेथी तेवा आवश्यक फेरफार नो निर्णय सर्वे आचार्यश्रीओए सहीयारो करवो घटे, पृथक पृथक नहीं (जे वर्तमान मां थई रह्यु छे), केमके, समग्र सृष्टि वास्तवमां 'श्रीवल्लभ' नी छे, जेनुं अनुसरण तेमना द्वारा प्रवर्तित 'पुष्टि- संप्रदाय' नुं ज करवानुं छे. सौ नुं अंतिम लक्ष पण एकज छे, जेने माटे आ संप्रदाय अंतर्गत 'साधना प्रणाली' जुदी जुदी होई शके नहीं. अलग अलग आचार्यो द्वारा अर्थधटन भिन्न भिन्न करी शकाय नहीं. ते मूल सिद्धांत थी विसंगत होवा न जोईए, केमके अन्यथा ते पुष्टिमार्ग न रही जाय !........ क्रमशः...... (डॉ. जयेन्द्र सोनी).

"संप्रदायनी सांप्रत स्थिति" (९)

****

...... क्रमशः...... परंतु वर्तमान मां पुष्टि-संप्रदाय मां एक बदलाव आवी रहेलो जोई शकाय छे, जेमां तेना प्रवर्तक श्रीमहाप्रभुजी द्वारा प्रस्थापित मुल्योमां परिवर्तन आवी रहेलुं देखाय छे.

ए वात साची छे के विग्यान नी प्रगतिना कारणे मनुष्य नी जीवन पद्धति मां तीव्र गतिथी फेरफार थई रह्या छे. अनेक प्रकारनी सुविधाओ आजे उपलब्ध छे, साथे साथे सामाजीक मुल्योमां पण परिवर्तन आव्युं छे. तेना कारणे संप्रदाय नी आचार-प्रणालीमां,वर्तमान जीवन पद्धति ने अनुरुप बदलाव लाववो कदाच आवश्यक पण गणी शकाय! तेम छतां श्रीमहाप्रभुजी द्वारा निरुपित सिद्धांतो वेद प्रतिपादित होई शाश्वत छे, सदा काल माटे उपयुक्त छे अने रहेशे. आचार प्रणालीमां जे पण परिवर्तन आवश्यक होय ते मूलभूत सिद्धांतो ने सुसंगत ज होवा जरुरी छे. तेनाथी विपरित के विरुद्ध न होई शके! भक्ति -शरणागति-समर्पण-सेवा विषयक जे सिद्धांतोनो निर्देश श्रीमहाप्रभुजीए कर्यो छे, तेनुं आचरण तदनुसार ज करी शकाय, अन्यथा नहीं !

केटलाक कहेवाता वैष्णवो, जेओ कोईक रीते पुष्टिमार्गीय परिवारथी जोडायेल होवा छतां, वर्तमान युगनी भौतिक विचारधाराथी प्रभावित थवाना कारणे श्रीमहाप्रभुजी नी दार्शनिक विचारधारा के प्रणालीने ज स्वीकारवा तैयार नथी होता, केटलाक जीवनमां आध्यात्मिक द्रष्टिकोण ना महत्त्व नेज पडकारता होय छे अने 'चार्वाक दर्शन' अनुसार 'खाओ पीऔं अने मौज करो' नी विचारधारा ने जीवननी वास्तविकता समजता होय छे, केटलाक वळी सर्व धर्म समभाव मां विश्वास धरावतां होवाथी सर्व देवोनी उपासना करनारा पण होय छे. परंतु तेमना वडिलो परंपरागत रीते 'पुष्टि संप्रदाय'ने अनुसरता होवाना कारणे, तेओ तेमां श्रद्धा न होवा छतां मात्र औपचारिक रुपे कदाच पुष्टिमार्ग नो आंचळो ओढी राखवा मांगता होय छे, अने

तदर्थ,संप्रदाय ने आधुनिक बनाववा तेमां व्यवहारिक परिवर्तन लाववा इच्छता होय छे. तेओनी कामनाओ / रुची ने संतोषवा /तेमना राजस भावने पोषवा,अथवा आर्थिक लाभ ना द्रष्टिकोण थी, वर्तमान मां तेओने ब्रह्मसंबंध दीक्षा आपवामां आवे छे, तेओने पोताना दैवी द्रव्य (!) नो विनियोग करी पुण्य कमावा माटे प्रोत्साहित पण करवामां आवता होय छे. तेमज तेओ द्वारा सामाजीक प्रतिष्ठा मेळववा विविध सांप्रदायिक उपक्रमो / कार्यक्रमो आयोजित करवामां आवता होय छे. मूलभूत सिद्धांतो थी विपरित होवा छतां ते श्रीम

"संप्रदायनी सांप्रत स्थिति" (१०)

****

...... क्रमशः ...... संप्रदाय न तो अंधश्रद्धा थी चाली शके न मनघडंत उपक्रमोथी, कारणके तेमां आपणी निष्ठा होती नथी. क्यां तो आपणे कांई अनर्थ न थाय तेवा भयथी के कोई अपराध ना डर थी आचरण करता होईए छीए अथवा क्यारेक आपणा राजस भावने कारणे मात्र अहंने पोषता होईए छीए. तेथीज तेनी फलदायिता होई शकती नथी. स्वयं श्रीमदाचार्यचरण निबंध मां आग्या करे छे के निष्ठा ना अभाव मां फल प्राप्ति संभव न बने.

तेथी जेओ 'पुष्टि जीव' छे, अने श्रीमहाप्रभुजी द्वारा प्रवर्तित 'पुष्टि-संप्रदाय'नुं अनुसरण करी फल-प्राप्ति करवा गंभीरतापूर्वक ईच्छता होय तेमणे श्रीमहाप्रभुजी नी आग्या नुं पालन करवुं आवश्यक छे. ते त्यारेज संभवी शके ज्यारे आपणे तेमना ग्रंथो द्वारा ते जाणीए. आपे अनिवार्यतः"कृष्ण सेवा" नो निर्देश कर्यो छे, तो साथे "शास्त्रम् अवगत्य मनोवाग्देहैः कृष्ण सेव्यः" नी आग्या पण करी छे. शास्त्रोनुं दोहन करी श्रीमहाप्रभुजीए पोताना ग्रंथो द्वारा शास्त्रो ने सरलतापूर्वक समजाव्या छे. जो तेने जाण्या विना कोई पण प्रक्रिया ने अनुसरता होईशुं तो लक्ष प्राप्ति संदिग्ध ज रहेशे!

भगवान गीतामां आग्या करे छे तेम मनुष्यनी पोतानो उद्धार करवानी स्वयंनी जवाबदारी होय तो, आपणे स्वयं ते माटे प्रयत्न करवो पडशे अने तदर्थ ग्रंथो भणवा - समजवा पडशे. वर्तमान परिस्थिती मां तो ते अनिवार्य छे केमके योग्य / अयोग्य नो निर्णय करवो मुश्केल छे.

एक वात आपणे स्पष्टपणे समजी लेवी जोईए के 'भगवद् -प्राप्ति' नो 'पुष्टिमार्ग' तेज छे जेना सिद्धांतो श्रीमहाप्रभुजीए तेमना ग्रंथो मां आलेख्या छे. सामान्यतः तेने यथार्थ रुपे समजाववानी जवाबदारी तेमना वंशज आचार्यश्रीओनी छे. अनुयायीए पण तदर्थ तेमनी पासेथी प्रमाण साथे तेने समजावा प्रयत्न करवो जोईए. ज्यारे तद्विषयक विरोधाभासी के विपरित वचन जणाय तो तेने मात्र अंधश्रद्धाथी अनुसरवानेवाने बदले वार्ता साहित्य ईत्यादि मां मलता अन्य प्रमाणो द्वारा मनन पूर्वक तेनो विचार करवो जोईए. जो आपणे कंईक अंशे पण ग्रंथो नो अभ्यास कर्यो हशे तो योग्य निर्णय लई शकाशे. ...... क्रमशः......(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"संप्रदायनी सांप्रत स्थिति" (११)

****

...... क्रमशः.... वर्तमान समयनी विडंबना ए छे के केटलाक आचार्यश्रीओ द्वारा श्रीमहाप्रभुजी ना

दिव्य सिद्धांतो नुं यथार्थ प्रतिपादन करवाने बदले वर्तमान देश-काल नी परिस्थिति ना ओठा हेठळ तेमना स्वयंना विचारोने अनुरुप उपदेश आपवामां आवतो होय छे. त्यारे निष्ठावान अनुयायीए विचारवुं जोईए के शुं सर्वग्य श्रीमदाचार्यचरण नी एटली दूरदर्शिता नहीं होय, तेम मानी शकाय !

ज्यारे आपश्रीए मानवजीवननी प्रत्येक परिस्थिति नो विचार करी विशेषतः पोताना 'सर्वनिर्णय -निबंध' मां पुष्टिजीवोने अनुलक्षीने अनेक खुलासा कर्या छे. गृहस्थजीवन नी आवश्यक्ता ने स्वीकारी तेमणे "स्वधर्माचरणं शक्त्या" कही वर्तमान परिस्थिति ने अनुरुप आचरणनो निर्देश कर्यो छे. भगवद् सेवानी साथे व्यावृत्ति माटे दिशा-निर्देश कर्यो छे. ग्रंथनो अभ्यास करतां आ वात नी स्पष्ट प्रतिति थाय छे. साथे साथे 'पुष्टिजीवन' ने माटेनी मूलभूत जरुरीयातोनी स्पष्टतया षोडशग्रंथो आदिमां आग्या करी छे, जे 'लक्ष' नी प्राप्ति माटे अनिवार्य गणाय.

तेमां कोई बांधछोडने अवकाश न होई शके, ते वातनो निर्देश श्रीमहाप्रभुजीए पोताना अंतिम ग्रंथ 'शिक्षाश्लोकी' मां बहिर्मुखता (अन्याश्रय इत्यादि) थी बचवा पोताना बालकोने पण अनुलक्षीने कर्यो छे, तेमछतां तेनाथी विरुद्ध आचरण अने आग्या बन्ने वर्तमान मां दृष्टि गोचर थाय छे, जेने चिंता नो विषय कही शकाय, अने तेथी अनुयायी वर्गे सावधान रहेवानी आवश्यक्ता छे.

क्यांक वांचेलु के "पोताना कुटुंबना पोषण अर्थे द्रव्योपार्जन करवा समाजना अर्थवादने आधिन रहेवुं पडे छे, तेथी आत्मनिष्ठा न होय परंतु केवळ साधन के आपद् धर्म तरीके करातो अन्याश्रय, अनन्याश्रय भावने बाधक नथी". (एक वचनामृत). विभिन्न तकलिफोमां विविध 'कवचों नो निर्देश तो साधारण वात छे !.तो पछी श्रीगुसांईजी ना वचन "अन्य संबंध गंधोपि कंधरामेव बाधते", इत्यादि वचनो नी यथार्थता ?

गंभीरतापूर्वक विचारवानो विषय छे ! अने आवो विचार ग्रंथो ना अध्ययन थी ज स्फुरित थाय, अन्यथा "गो. बालक " कांई खोटुं कहे?, तेम मानसिकता प्रवर्ते छे ! .... क्रमशः...... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"संप्रदायनी सांप्रत स्थिति" (१२)

****

.... क्रमशः...... कोईपण संप्रदाय नुं अनुसरण तेना प्रस्थापक - प्रवर्तक आचार्य द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतो मुजब करवुं आवश्यक होय कारणके तोज तेनुं प्रयोजन सार्थक थाय. वर्तमान मां 'पुष्टि संप्रदाय' नुं प्रवर्तन तेना मूल प्रवर्तक श्रीवल्लभाचार्यजी ज परोक्ष मां तेमना वंशमां बिराजीने करी रह्या छे ते तेमनुं 'भगवद् सामर्थ्य' रुप माहात्म्य छे. तदर्थ तेमना वंशज आचार्यश्रीओनुं स्वाभाविक कर्तव्य होवुं अपेक्षित ज नहीं अनिवार्य गणाय के तेमनुं आचरण तेमज तेमना द्वारा आपवामां आवतां निर्देशो / उपदेशो श्रीमहाप्रभुजीना विचारोने ज प्रवर्तित / परावर्तित करे, अन्यथा ते प्रमाणित (valid) न कहेवाय !

आ तथ्य नी प्रतीति अनेक प्रमाणो थी थाय छे. सर्व प्रथम तो श्रीमहाप्रभुजीए स्वयं ज सर्वप्रकरण - निबंध मां 'गुरु' ना लक्षण बतावी, आचार्यश्रीओनी 'कृष्ण-सेवा परायणता' तेमज भागवत (आदि प्रमाण शास्त्रो) ना मर्मग्य होवा नी आवश्यक्ता नो निर्देश कर्यो छे, केमके तोज तेओ श्रीमहाप्रभुजी द्वारा निर्दिष्ट 'सेवा प्रणाली' तेमज तेमना 'दार्शनिक सिद्धांतो' विशे अनुयायी वर्गने साचु अने प्रमाणभूत मार्गदर्शन आपी शके. लेखकार श्रीपुरुषोत्तमजी, केमके वल्लभ वंशज आचार्यश्रीओने 'गुरुद्वार' लेखावे छे त्यारे ए वात स्पष्ट छे के तेमने (वंशजोए) श्रीमहाप्रभुजीनी वाणी -विचारोने ज वर्तमान मां तेमना वती रजु करवा फरजीयात गणाय.

तेओ स्वतंत्रतया पुष्टिमार्ग ना नामे पोताना विचारो के सिद्धांतोनुं प्रवर्तन करी शके नहीं, जे वर्तमान मां क्यांक क्यांक नजरे पडे छे, अने अनुयायी तेने श्रीमहाप्रभुजीना सिद्धांत रुपे अथवा वल्लभकुल आचार्यने ज गुरु रुपे स्वीकारतो होई तेवा वचनोने प्रमाण रुपे मानते होय छे.

आ विशे महाप्रभु श्रीहरिरायजी नो दिशा-निर्देश पण महत्त्वपूर्ण प्रकाश पाडे छे, जेने नजरअंदाज करी शकाय नहीं. तेओ स्पष्टपणे कहे छे के श्रीमहाप्रभुजी नी वाणी थी विपरित वचनोने 'दुःसंग' गणवो जोईए, तदर्थ ते बाधक छे (चाहे ते कोई आचार्य द्वारा केम न कहेवाता होय).(शिक्षापत्र ३/८-११). तेओ श्रीमहाप्रभुजी नी आग्या ना उल्लंघन ने 'अपराध' गणावे छे. (अपराध -३५). प्रत्येक आचार्यश्री सामान्यतः श्रीमहाप्रभुजी ना आश्रय नो तो उपदेश करतां होय छे, परंतुं मात्र वाणीथी आश्रय थयी शके नहीं. परंतु श्रीमहाप्रभुजी नी आग्या ना पालन द्वारा त आचरण मां ते देखावो जोईए. श्रीहरिरायजी आग्या करे छे के आशय वाणीथी नहीं परंतु मार्ग-निष्ठा थीज होवो जोईए (शिक्षापत्र ८-२६/२८). श्रीमहाप्रभुजी स्वयं ज निबंध (शास्त्रार्थ प्रकरण-१८) मां आग्या करे छे के निष्ठा ना अभाव मां कोई फल प्राप्ति संभव बनी शकती नथी.

श्रीवल्लभकुल 'गुरुद्वार' छे. तेथी स्तुत्य छे, वंदनीय छे, केमके वर्तमान मां श्रीमहाप्रभुजी तेमना द्वारा पोतानी कृपा नो अनुभव करावे छे. परंतु आचार्य स्वरुपे प्रकट थतां, भगवद्रुप होवा छतां स्वयं श्रीमहाप्रभुजी, श्रीगुसांईजी ए पण शास्त्रो नुं अध्ययन कर्यु हतुं, तेम वर्तमान मां वल्लभकुल आचार्यश्रीओए पण पद्धतिसर शास्त्रो / ग्रंथो नो अभ्यास करवो अनिवार्य गणाय जेथी तेओ अनुयायी वर्गने साचु मार्गदर्शन आपी शके.

वर्तमान मां मोटाभागे by default ज आचार्य बालक गुरु-स्थान ग्रहण करता होवाथी (आमां घणां अपवाद रुप योग्यता प्राप्त आचार्श्रीओ पण छे) पोत-पोताना मनघडंत विचारो प्रकट करी विपरित आग्याओ करतां होय छे. अनुयायी तेने श्रद्धापूर्वक 'वल्लभ' नी आग्या मानी माथे चढवता होय छे, जेना कारणे आजे संप्रदाय नी स्थिति डोहडायेली देखाय छे.

जो आपणे पोताने यथार्थ रुपे 'पुष्टि जीव' समजता होईए अने साचेज आपणुं श्रीमहाप्रभुजी ना मार्गे चाली भगवद्-प्राप्ति' नुं लक्ष होय तो, आ विशे वास्तविक स्थिति नो गंभीरतापूर्वक विचार करवो आवश्यक छे. ...... क्रमशः ....

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)